Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

भारतीय संगीत में गुप्तकालीन शिक्षण प्रणाली

SHIPRA SAXENA[1] & DR.(SMT.) BRAJRANI SHARMA[2]

[1]Research Scholar, Dr.Bhimrao Ambedkar University, Agra, Uttar Pradesh
[2](H.O.D, Music) Associate Professor, Shri Tika Ram Kanya Mahavidyalaya, Aligarh, Uttar Pradesh

सार

ज्ञातव्य तथ्य है, कि एक महान राष्ट्र की स्थापना वहाँ की सुसमृद्ध, सर्वग्राह्य, सशक्त एवं प्रतिभाशाली शिक्षा पर निर्भर करती है जो कि एक उपयुक्त शिक्षण प्रणाली द्वारा ही संभव है। हमारे देश में शिक्षा-शिक्षण की प्रणाली प्राचीन समय से चली आ रही है। जो समय के साथ विकसित भी हुयी। जिसमें भारतीय संगीत में गुप्तयुगीन शिक्षण के महत्व एवं उसकी प्रभावशीलता को नकारा नहीं जा सकता है। भारतीय संगीत के क्षेत्र में गुप्तयुगीन शिक्षण प्रणाली अपने आप में एक पूर्णता को प्राप्त किये हुये हैं। यदि संक्षेप में कहें कि गुप्तयुग में हर व्यक्ति की आवश्यकतानुरूप शिक्षण की एक स्वस्थ प्रणाली विकसित हो चुकी थी। तो यह अतिश्योक्ति न होगी। गुप्तयुग में विद्वानों, आचार्यों, द्वारा शिक्षण की पुरानी चली आ रही प्रणालियों में नवोन्मेष के साथ विकास किया गया। जिसका मूल रूप हमारे देश से धीरे-धीरे लुप्त होता जा रहा है। आधुनिक समय में जहाँ लगभग हर विद्यार्थी केवल अच्छे अंक, पद, प्रतिष्ठा प्राप्ति के तनाव में रहकर शिक्षा प्राप्त करता है। वहाँ यह आवश्यक हो जाता है कि उन्हें भारतीय संगीत के क्षेत्र में उन सभी शिक्षण प्रणालियों द्वारा शिक्षा प्रदान की जाये ताकि हमारे देश के प्रत्येक विद्यार्थी अपने जीवन के मूल उद्देश्यों से न भटकते हुये आनन्दमयी शिक्षा के रूप को प्राप्त करे। इसलिये वर्तमान समय की माँग हो जाती है कि हम अपने देश की धरोहर रूप गुप्तयुगीन कुशल शिक्षण प्रणालियों से परिचित होने के साथ-साथ उससे लाभान्वित भी हों।

उद्देश्य:- भारतीय संगीत के क्षेत्र में गुप्तकाल की शिक्षण प्रणाली का अध्ययन करना।

मुख्य बिन्दु:- गुप्तयुगीन, शिक्षण, प्रणाली, संगीत शिक्षा।

परिचय

हमारे जीवन में संगीत के महत्व से लगभग समस्त प्रबुद्धजन भिज्ञ हैं। जो कि शिक्षा प्रणाली से पूर्णतः प्रभावित है। साधारण शब्दों में शिक्षा का अभिप्राय एक व्यक्ति अथवा साधन द्वारा ज्ञान का एक से दूसरे व्यक्ति में धनात्मक हस्तान्तरण से है जो कि एक योग्य, परिपक्व व सुसमृद्ध शिक्षण प्रणाली द्वारा ही सम्भव है। भारतीय संगीत में गुप्तयुगीन शिक्षण प्रणाली की महत्ता अनुकरणीय है। जिसके यथोचित वर्णन हेतु वर्तमान समय की शिक्षण प्रणाली पर भी थोड़ा प्रकाश डालना आवश्यक है। वर्तमान समय में हमारे देश में संगीत की शिक्षा मुख्य दो प्रणालियों द्वारा दी जाती है। प्रथम व्यक्तिगत अथवा घराना शिक्षण पद्धति जो कि प्राचीन काल की गुरूकुल शिक्षण पद्धति से साम्यता रखती है एवं द्वितीय संस्थागत संगीत शिक्षण पद्धति जिसे विद्यालयी संगीत शिक्षण प्रणाली की भी संज्ञा प्राप्त है। दोनों ही पद्धतियाँ कहीं न कहीं हमारे प्राचीन समय की शिक्षण पद्धतियों से प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से सम्बद्ध हैं। भारतीय संगीत में गुप्तयुगीन संगीत शिक्षण प्रणालियों की बात करें तो उस समय की शिक्षण प्रणालियों ने हमारे देश में एक विशिष्ट रूप कायम किया। यद्यपि विभिन्न विधाओं की शिक्षण प्रणाली गुप्त युग के पूर्व में भी प्रचलित थी तथापि भारतीय संगीत शिक्षण का जो विकसित व उन्नतिशील रूप हमें गुप्तयुग में देखने को मिला वह पूर्ववर्ती समय में नहीं था। इस कथन से तो शायद ही कोई अनभिज्ञ हो कि कला, संगीत, साहित्य के क्षेत्र में गुप्तयुग एक स्वर्णयुग के रूप में सुशोभित होने के साथ ही अपने उत्तरोत्तर समय के प्रबुद्धजनों के लिये अनुकरणीय भी रहा। जिसके मुख्य कारणों में गुप्तयुगीन शिक्षण प्रणालियों का बहुमुखी एवं प्रेरणादायक होना भी था। जिसने गुप्तयुग में विद्यमान प्रत्येक कला के गौरवपूर्ण विकास के साथ उसे प्रेरणास्त्रोत भी बनाया।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

गुप्तयुगीन सांगीतिक शिक्षण प्रणाली

गुप्तयुग में संगीत क्षेत्र से सम्बद्ध हर क्षेत्र का विकास हुआ साथ ही जो विकास हुआ वह उत्तरोत्तर भी प्रगतिशील पथ पर अग्रसर रहा। गुप्तयुगीन सांगीतिक शिक्षण प्रणाली मे कई नवीन के साथ पुरानी चली आ रही शिक्षण प्रणालियों के विकसित रूप देखे गये। जिनका यथोचित वर्णन निम्न प्रकार से किया जा सकता है।

भारतीय संगीत में गुप्तयुगीन संगीन शिक्षण प्रणाली एक साधना थी। संगीत शिक्षा नियमों, सिद्धान्तों में बद्ध होने के साथ शिष्ट शिक्षकों द्वारा अनुशासनानुरूप दी जाती थी। न केवल राजघराने अपितु जनसाधारण भी संगीत की महत्ता से परिचित था। उन्हें संगीत के नियमों व सिद्धान्तों का ज्ञान शिष्ट शिक्षकों द्वारा प्राप्त करने का पूर्ण अधिकार प्राप्त था। जिसका एक बहुत ही मनोभाव उदाहरण हमें महाकवि कालिदास (जो कि गुप्तकाल के महान कवि/साहित्यकार थे) के प्रसिद्ध ग्रन्थ मालविकाग्निमित्रम् से प्राप्त होता है। मालविकाग्निमित्रम नाटक का आरंभ ही नृत्यकला के शिक्षण के दृश्य से होता है। जिसमें हरिदत्त एवं गणदास प्रमुख संगीताचार्य हैं एवं एक दूसरे के कुशल प्रतियोगी भी हैं। वे इरावती एवं मालविका को संगीत शिक्षा देने के लिये नियुक्त करते हैं व तय करते हैं कि अपने दोनों शिष्यों की संगीतकुशलता की परीक्षा ली जाय। जिससे दोनों संगीतकारों की श्रेष्ठता सिद्ध हो सके। यह दृश्य सिद्ध करता है कि गुप्तयुग में शिष्यों के संगीत प्रवीण कुशल प्रदर्शन से ही आचार्यों की श्रेष्ठता तय होती थी। इसमें शिक्षण के गुणों से सम्बन्धित एक श्लोक भी वर्णित है-

यस्योभयं साधु स शिक्षकाणां धुरी प्रतिष्ठापयितव्य एवः।।

गुप्तयुगीन संगीत शिक्षण पद्धति में व्यक्तिगत नेपुण्य के साथ श्रेष्ठ शिक्षादान का गुण एक महान आर्चा के लिये आवश्यक था।

इसी समय में अज नाम के संगीतज्ञ का नामोल्लेख प्राप्त होता है। जिसके द्वारा स्वयं अपनी रानी को संगीत विद्या में व्यक्तिगत रूप से शिक्षित किया गया था, साथ ही जब उसकी मृत्यु हो गयी तब उसे अज ने ललित कलाओं में प्रिय-शिष्या कहकर सम्बोधित किया। जो कि गुप्तयुगीन संगीत शिक्षण की गुरू शिष्य प्रणाली का एक प्रेरक उदाहरण है।

इसके अतिरिक्त बात्स्यायन का कामसूत्र (जो कि गुप्तयुग का प्रसिद्ध ग्रन्थ है) में संगीतशालाओं में संगीत शिक्षा की व्यवस्था का वर्णन प्राप्त होता है। जिनका संचालन नगर के गणमान्य व्यक्तियों द्वारा होता था। न केवल राजकुमार-राजकुमारियाँ अपितु जनसाधारण भी साथ में संगीत शिक्षा प्राप्त कर सकता था। अर्थात गुप्तयुग में संगीत की सह शिक्षा प्रणाली भी प्रचार में थी। गुप्तयुग में कोई भी व्यक्ति संगीत शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् ही योग्य नागरिक कहा जाता था। इन संगीतशालाओं में शिक्षण के अलावा जो गुरू-शिष्य परम्परा प्रचार में थी, उसे भी विशेष गौरव व सम्मान प्राप्त था।

भास के नाटकों से ज्ञात होता है कि गुप्तयुग में राजघरानों के बच्चों के लिये प्रथक से कुछ संगीत विद्यालयों का निर्माण करने की प्रथा थी। जो कि राजभवन का एक आवश्यक अंग माने जाते थे। लेकिन इन संगीतगृहों/संगीत विद्यालयों के निर्माण का तात्पर्य यह कदापि नहीं था कि जनसाधारण संगीत शिक्षण की सुविधाओं से वंचित हो। ये सभी के लिये सर्वसुलभ रूप से प्राप्त कला थी।

इस युग में संगीत शिक्षण कला को विशेष सम्मान प्राप्त होता था क्योंकि संगीतकला को केवल राजाश्रय प्राप्त नहीं था, बल्कि राजा स्वंय भी संगीत कला में रूचि रखते थे व उसमें विशेषज्ञता प्राप्त करते थे।

महाकवि कालिदास की लगभग गुप्तकालीन सभी कृतियों से हमें गुप्तयुगीन शिक्षण प्रणालियों के अनेको प्रेरक साक्ष्य प्राप्त होते हैं। इस युग में योग्य, कुशल, प्रवीण तथा सिद्ध आचार्यों द्वारा ही संगीतिक शिक्षण की व्यवस्था थी एवं जो शिक्षा परम्परागत रूप से विद्यालयों में नियमित तौर पर प्राप्त की जाती थी, उसे विशेष सम्मान व गौरव का दर्जा प्राप्त था। इस सम्बन्ध में महाकवि कालिदास के ग्रन्थों से एक श्लोक भी प्राप्त होता है-

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

कामं खलु सर्वस्यापि कुल विद्या बहुमिता।।

कुछ विद्यालय राजभवन में व कुछ बाहर भी चलाये जाते थे। परन्तु सभी के संगीत शिक्षण के उद्देश्य अलग-अलग होते थे। यद्यपि दासियाँ एवं रानियाँ दोनों ही परम्परागत रूप से शिक्षण संगीत शिक्षा प्राप्त करते थे तथापि दोनों को संगीत शिक्षण देने के उद्देश्य अलग थे। दासियाँ राजा व महिर्षियों का मनोरंजन के लिये संगीत शिक्षा प्राप्त करती थीं। जैसा कि विक्रमोवर्शीयम के कथन से स्पष्ट होता है-

निपुणके संगीत का व्यापार मुज्झित्वा क्व प्रस्थिताडसि।।

इसमें विदुषक दासी निपुणिका से कहता है कि निपुणके तुम संगीत कार्य छोड़कर कहाँ चलीं?

गुप्त युग में विद्यार्थियों का संगीत कला के शिक्षण को प्राप्त करने के लिये चयन उनकी पात्रता को ध्यान में रखकर किया जाता था। नृत्यकला के लिये शारीरिक सुन्दरता, लोचता को विशेष महत्व देते थे। जिसके लिये गुरूओं द्वारा एक प्रवेश परीक्षा का आयोजन कराया जाता था। जो छात्र उत्तीर्ण होते थे वे ही गुरूओं से शिक्षा प्राप्त करते थे। उसी प्रणाली का मिलता रूप वर्तमान समय में हमारे देश में आंशिक परिवर्तन के साथ लागू है।

इसके अतिरिक्त अग्निमित्र के राजमहल में भी एक विधिक्त संगीतगृह था। जिसमें संगीत के अनेक प्रकारों की शिक्षा विभिन्न पारंगत आचार्यों की देखरेख में दी जाती थी। संगीत शिक्षण के लिये स्वयं शासन उस पर धन खर्च करता था क्योंकि गुप्तयुगीन प्रशासनिक व्यक्ति स्वंय संगीत कला को सम्मान देते थे व उसमें रूचि रखते थे। महाराज विक्रमादित्य जो गुप्त युग के एक आदर्श सम्राट थे, उन्होंने अपने राजमहल में उच्च वेतन व सम्मान के साथ पारंगत आचार्यों की नियुक्ति की थी। महाकवि कालिदास भी उनके दरबार के नवरत्नों में विशेष पद प्राप्य विद्वान थे। संगीतकुशलता में वृद्धि हेतु समय-समय पर कुशल प्रतियोगिताओं का आयोजन कराया जाता था। जिसमें अच्छे पुरस्कारों की व्यवस्था की जाती थी। नाटककार शूद्रक के मृच्छकटिकम् में भी इसी प्रकार के संगीत शिक्षण सम्बन्धी प्रणीत दृश्य अवलोकित होते हैं।

शास्त्रीय एवं लांेक संगीत दोनों के लिये अलग-अलग विधिक्त शिक्षण की व्यवस्था होती थी। शास्त्रीय संगीत की नियमों व सिद्धान्तों के अनुरूप शिक्षण की व्यवस्था थी। जो कि लोकसंगीत शिक्षण से भिन्न होती थी। गुप्त युग में संगीत शिक्षण के क्षेत्र में अविस्मरणीय एवं बहुमुखी विकास हुआ। यही कारण था कि गुप्तयुग की तुलना विद्वानों द्वारा पेरिक्लीयन युग और एलिजाबेथ युग से भी की गयी। जबकि गुप्त युग के प्रारम्भिक समय में राज्य द्वारा संचालित संस्थान विकसित नहीं थे। गुरू अपने निवासगृहों, आचार्य अपने आश्रमों आदि में गुरू-शिष्य परम्परानुरूप शिक्षा देते थे। लेकिन समय के साथ आवश्यकतानुसार न केवल इसका विकास हुआ बल्कि सभी के लिये आदर्श भी स्थापित किया। गुप्तयुग में आरम्भिक समय में शिक्षण कार्य हेतु जिस भूमि का प्रयोग होता था। उसे अग्रहार की संज्ञा से सम्बोधित करते थे।

पाटलिपुत्र, मथुरा, बनारस, उज्जैन, अयोध्या, नासिक, बल्लभी आदि गुप्तयुगीन शिक्षण के प्रमुख केन्द्रों के रूप में ख्याति प्राप्त स्थान हैं। जिसमें बिहार के नालन्दा विश्वविद्यालय की गौरवशाली प्रतिभा से सभी भिज्ञ हैं। जिसको वर्तमान में वही रूप प्रदान करने के लिये हमारा देश प्रयासरत है। इसके अतिरिक्त कुशीनगर के स्थानीय कस्बों के आस-पास स्थित ऐतिहासिक टीले व इन जगहों से प्राप्त साक्ष्यों में एक फाजिलनगर नामक स्थान का नाम प्रकाश में आता है। जो कि गुप्तकालीन शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था।

उपसंहार

भारतीय संगीत में गुप्तयुगीन शिक्षण प्रणालियाँ विशेष महत्व की हैं। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि आधुनिक समय में आवश्यकता अनुरूप ऐसी संयोजित संगीत शिक्षण प्रणाली विकसित हो, जो संगीत शिक्षण की विशेषताओं जो वर्तमान में लुप्त हो

गयी हैं, उन्हें समाविष्ट किये हों। जिससे संगीत शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी हमारे भारतीय संगीत की धरोहर से वंचित न रहें। आधुनिक समय में जब उच्च शिक्षा सहित सभी क्षेत्रों में संगीत को बराबर का दर्जा दिया गया है तो यह आवश्यक हो जाता है कि संगीत शिक्षण की रचनात्मक, क्रियात्मक सीमाओं को दृष्टि में रखकर गुप्तकालीन प्रेरक शिक्षण विधियों के व्यक्तिगत, संस्थागत व अन्य प्रणालियों के श्रेष्ठ तत्वों को आज की शिक्षण पद्धतियों में सम्मिलित कर उन्हें समृद्ध किया जाये। जिससे हमारी शिक्षण प्रणालियों की गुणवत्ता के साथ शिक्षण प्रणाली की प्राचीन परम्परा समृद्ध व गौरवान्वित हो सके।

संदर्भ

कुमारी, ए. (2013). कालिदास के कृतित्व में प्रयुक्त संगीत के विभिन्न आयाम एवं भारतीय शास्त्रीय संगीत में इनका महत्व (पीएच.डी. शोध प्रबन्ध, वनस्थली विश्वविद्यालय)।

गुप्ता, एस. (2016). भारतीय रंगमंच में संगीत का विविधात्मक प्रयोग एक अध्ययन (पीएच.डी. शोध प्रबन्ध, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान)। http://hdl.handle.net/10603/200218

ठाकुर, जे. (2016). भारतीय संगीत का इतिहास: तृतीय संस्करण, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

परांजपे, एस. (2015). भारतीय संगीत का इतिहास: (वैदिक काल से गुप्त काल तक) प्रथम संस्करण, चैखाम्भा विद्या भवन वाराणसी, उ.प्र.।

विसोई, एस. (2009). जीवन के विविधि आयामों में संगीत भक्ति शिक्षा मनोरंजन एक अध्ययन. (पीएच.डी. शोध प्रबन्ध, बी.बी. एस. पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उ.प्र.) http://hdl.handle.net/10603/182530